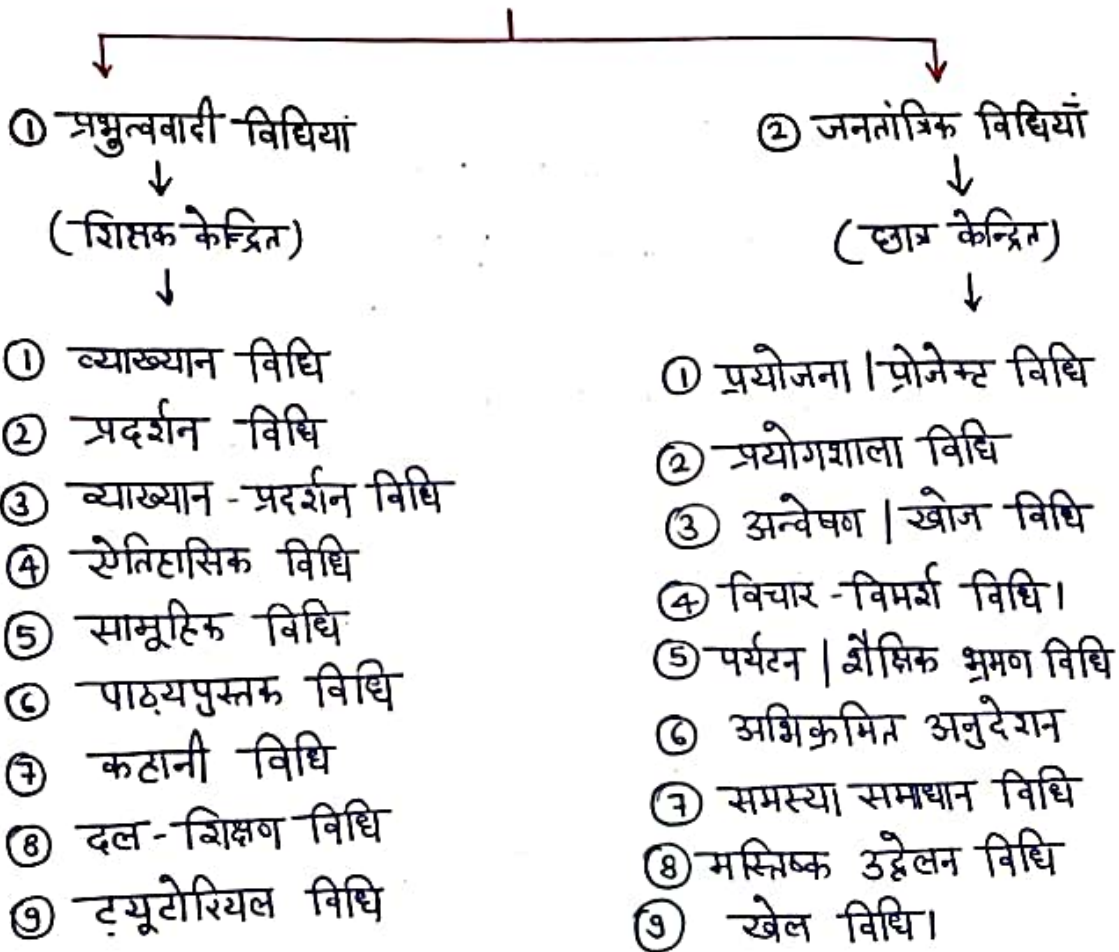


❖ शिक्षण विधियाँ ❖



① व्याख्यान विधि :- अन्य नाम - भाषण विधि या कथन विधि।

↳ इस विधि में शिक्षक किसी विषय विशेष पर कक्षा में व्याख्यान देते हैं तथा छात्र निष्क्रिय होकर सुनते हैं।

○ विशेषताएँ → यह विधि आर्थिक दृष्टि से उपयोगी है, क्योंकि इसमें वैज्ञानिक सामग्री व उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती।

→ इससे बालको को ध्यान केन्द्रित करने की आदत पड़ जाती है-

↳ यह दल विषय-वस्तु व विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार शिक्षण कार्य को प्रभावी रूप से संपादित करते हैं।

★ सर्वप्रथम प्रयोग - 1955

↳ अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय।

(10) ट्यूटोरियल विधि :-

इस विधि में विद्यार्थियों के एक समूह को पढ़ाया जाता है।

↳ यह वे विद्यार्थी होते हैं जो कक्षा में पिछड़ जाते हैं या इनकी कोई प्रकरण समझ नहीं आता है। तो शिक्षक इनको अलग से शिक्षण करवाता है।

जनतांत्रिक विधियाँ :-

(1) प्रोजेक्ट / प्रयोजना विधि →

↓
• प्रतिपादक - जॉन ड्यूवी के शिष्य किलपैट्रिक ने।

→ किलपैट्रिक के अनुसार - "प्रोजेक्ट सामाजिक वातावरण में पूर्ण संलग्नता से किया जाने वाला उद्देश्यपूर्ण कार्य है।"

↳ इस विधि में छात्रों के समझ एक समस्या प्रस्तुत की जाती है। और छात्र उसका हल निकालने में लगे रहते हैं।

↳ इसमें छात्र स्वयं अपनी रुचि से विषय-वस्तु व क्रिया में सामंजस्य स्थापित करते हुए अपनी अध्ययन गति से अधिगम करता है।

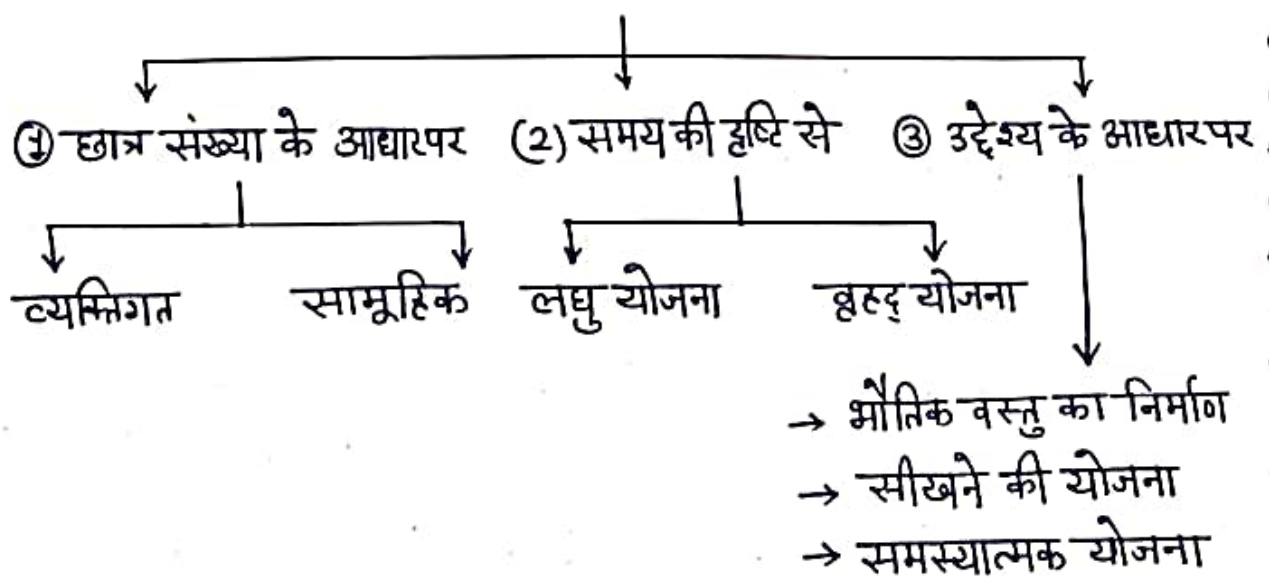
① प्रयोजना विधि के पद / सोपान →

- ① उद्देश्य / परिस्थिति का निर्माण।
- ② योजना बनाना।
- ③ क्रियान्वयन।
- ④ मूल्यांकन।

② वर्तमान समय में पद →

- ① परिस्थिति प्रदान करना।
- ② प्रोजेक्ट का चुनाव और उसके उद्देश्य का स्पष्टीकरण।
- ③ परियोजना का नियोजन / कार्यक्रम बनाना।
- ④ प्रोजेक्ट का क्रियान्वयन।
- ⑤ प्रोजेक्ट का मूल्यांकन।
- ⑥ प्रोजेक्ट का अभिलेखन / आलेखन।

③ प्रोजेक्ट के प्रकार



↳ इस विधि में शिक्षक विषय-वस्तु के सैद्धान्तिक पक्ष को व्याख्यान विधि द्वारा स्पष्ट करता है तथा व्यवहारिक व जटिल विषय-वस्तु का स्पष्टीकरण प्रदर्शन विधि द्वारा करता है।

(4) सामूहिक वाद-विवाद विधि :-

↓
• अन्य नाम → सामूहिक परिचर्चा, सामूहिक विचार-विमर्श, सामूहिक गोष्ठी।

↳ इस विधि में सामूहिक परिचर्चा अर्थात् विद्यार्थियों तथा शिक्षक के मध्य या विद्यार्थियों के मध्य होने वाले पारस्परिक वाद-विवाद व विचारों के आदान-प्रदान की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का मुख्य का मुख्य साधन बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

○ विचार-विमर्श पद्धति के पद :-

- ① विषय का चयन (Selection of Subject)
- ② विचार-विमर्श हेतु तैयारी (Preparation for discussion)
- ③ विचार-विमर्श का संचालन | क्रियान्वयन
- ④ विचार-विमर्श का मूल्यांकन।

○ वाद-विवाद विधि के प्रकार :-

- ① अनौपचारिक वाद-विवाद (Informal discussion)
- ② औपचारिक वाद-विवाद (Formal discussion)

- ↓
- (a) पैनल चर्चा
 - (b) परिसंवाद / परिचर्चा

↳ यह विधि हरबर्ट स्पेन्सर के इस कथन पर आधारित है-
"बालको को जितना संभव हो कम से कम बताया जाये और यथा-
संभव उनको खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।"

↳ यह मनोवैज्ञानिक विधि है।

○ दोष / सीमाएं →

- यह विधि छोटी कक्षाओं के लिए उपयोगी नहीं है।
- यह दीर्घ व खर्चीली है तथा इससे पाठ्यक्रम को समय पर पूरा करने में कठिनाई आती है।
- इस विधि के लिए समस्याओं का निर्धारण करना कठिन है।

(4) विचार-विमर्श विधि :-

विचार-विमर्श को चर्चा-परिचर्चा विधि भी कहते हैं।

- इस विधि में शिक्षक तथा विद्यार्थी सहयोगपूर्ण ढंग से किसी समस्या या प्रकरण पर बहस करते हैं।
- इसमें विद्यार्थी को अपनी बात कहने, सुनने व प्रश्न करने का पुरा अवसर प्राप्त होता है।
- यह विधि पूर्णतः लोकतांत्रिक विधि है।

* महत्वपूर्ण घटक →

- ① शिक्षक - विद्यार्थी समूह
- ② समस्या
- ③ समस्या का समाधान

○ विचार-विमर्श विधि के सोपान →

- ① समस्या की प्रस्तुती
- ② समस्या तथा समाधान के स्रोतों से अवगत कराना।

→ इसमें कम समय में विषय वस्तु का ज्ञान सरल, सुगम व बोधगम्य तरीके से कराया जा सकता है।

— कई परिस्थितियों में यह विधि विशेष रूप से उपयोग है।

- किसी पाठ की प्रस्तावना व सारांश करते समय।
- प्रयोग से संबंधित निर्देश देते समय।
- कठिन प्रसंगों को स्पष्ट करते समय।
- महान व्यक्तियों, वैज्ञानिकों की जीवनी से परिचित कराते समय।

① दोष :- ① प्राथमिक कक्षाओं के लिए उपयोगी नहीं।

② यह विधि अमनोवैज्ञानिक है।

③ इस विधि से व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती है।

④ केवल कुशल तथा योग्य अध्यापक ही इस विधि का अनुसरण कर पाते हैं।

② प्रदर्शन विधि :-

इस विधि में किसी तथ्य, नियम, सिद्धांत संरचना या कार्यप्रणाली को दृश्य रूप में स्पष्ट किया जाता है। अर्थात् इस विधि में किसी वैज्ञानिक घटना को दृश्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

→ यह विधि मूर्त से अमूर्त शिक्षण सूत्र पर आधारित है।

① सोपान/पद (Step) →

① अध्यापक द्वारा तैयारी व योजना बनाना।

② पाठ की प्रस्तावना करना।

(2) प्रयोगशाला विधि :- यह पूर्ण क्रियात्मक विधि है, जिसमें विद्यार्थी स्वयं क्रिया करते हुए सीखता है।

- गणित व विज्ञान विषय में यह विधि उपयोगी है।
- यह विधि स्थूल से सूक्ष्म की ओर, ज्ञात से अज्ञात, करके सीखना..... आदि शिक्षण सिद्धांतों पर आधारित है।
- इस विधि में छात्र व अध्यापक दोनों सक्रिय रहते हैं। अध्यापक छात्रों की आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान करके उनका मार्गदर्शन करने के साथ-साथ उनके कार्यों का निरीक्षण करता है।

दोष/सीमारें :-

- ① प्रत्येक प्रकरण को इस विधि से पढ़ाया जाना संभव नहीं है।
- ② यह विधि अत्यंत खर्चीली है तथा समय भी अधिक लगता है।
- ③ सभी शिक्षक इस विधि का प्रभावशाली उपयोग नहीं कर सकते।

(3) अन्वेषण/खोज विधि :- अन्य नाम - अनुसंधान विधि

- ↓
- प्रवर्तक - H.J आर्मस्ट्रांग → ह्यूरिस्टिक विधि
 - स्वतः ज्ञान विधि

↳ ह्यूरिस्टिक शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के ह्यूरिस्को से मानी जाती है।

[अर्थ - मैं खोजता हूँ।]

↳ इस विधि में बालक स्वयं एक खोजी के रूप में कार्य करता है। तथा समस्याओं के समाधान करता है।

(5) कार्य गोष्ठी विधि :- इस विधि वाद-विवाद का एक विस्तारित रूप है।

- इस विधि में रचनात्मक कार्य में विशेष बल दिया जाता है।
- इसमें विचार पक्ष की अपेक्षा कार्य-पक्ष पर बल दिया जाता है।

① गुण :-

- ① इसमें समूह का नेतृत्व करने का अवसर मिलता है, जिससे यह छात्रों में नेतृत्व क्षमता के विकास में सहायक है।
- ② मिल-जुलकर कार्य करने से परस्पर सहयोग की भावना का विकास होता है।
- ③ वाद-विवाद द्वारा विद्यार्थी सामूहिक रूप से निर्णय करना सीखते हैं।
- ④ इसमें छात्रों में तर्क-शक्ति, आलोचनात्मक चिंतन व मानसिक शक्तियों का विकास होता है।
- ⑤ यह छात्रों को क्रियाशील बनाए रखती है।

② दोष :-

- ① बोलने में दक्ष विद्यार्थी वाद-विवाद में प्रभुसत्ता बना लेते हैं। जिससे शर्मीले व मंद बुद्धि वाले विद्यार्थियों हेतु बहुत ज्यादा लाभदायक नहीं।
- ② कई बार निरर्थक वाद-विवाद हो जाने पर श्रम व समय का अपव्यय होता है।
- ③ इसके द्वारा सम्पूर्ण विषय-वस्तु का शिक्षण संभव नहीं होता है।

⑥ ऐतिहासिक विधि :-

अतीत की सहायता से वर्तमान को समझने की विधि है।

→ इस विधि का शिक्षण में विशेष महत्व है क्योंकि कुछ विषय ऐसे होते हैं जिससे बिना पुस्तक के पढ़ना या पढ़ना असंभव होता है।

→ इस विधि में पुस्तक पढ़कर ज्ञान प्रदान किया जाता है। जिसमें समय व श्रम की बचत होती है।

⑦ पाठ्यपुस्तक विधि :- यह विधि बहुत ही प्राचीन व सरल विधि है।

→ P.V. यंग के अनुसार आगमन के सिद्धांतों के आधार पर अतीत की उन सामाजिक शक्तियों की खोज है, जिन्होंने वर्तमान को ढाला है।

⑧ कहानी विधि :-

इस विधि में अध्यापक शिक्षण की कहानी के माध्यम पढ़ाता है।

↳ इस विधि में बच्चे केवल सुनता है।

↳ रामायण, महाभारत आदि प्रकरण को इस विधि से आसानी से समझाया जाता है।

↳ छोटी कक्षाओं के लिए उपयोगी है।

⑨ दल-शिक्षण विधि :- अन्य नाम - टोली-शिक्षण

↳ इस विधि में एक अध्यापक के स्थान पर विभिन्न क्षेत्रों के दस अध्यापकों का एक दल होता है।

- ③ पाठ का प्रस्तुतीकरण करना।
- ④ प्रयोग का प्रदर्शन करना।
- ⑤ श्यामपट्ट कार्य व सारांश।
- ⑥ कक्षा का निरीक्षण व मुख्य बिन्दुओं का आंकलन।
- ⑦ प्रदर्शन का मूल्यांकन।

○ गुण / विशेषता :-

- ↳ ① सस्ती, कम खर्चीली है।
- ② इस विधि में कक्षा का वातावरण सक्रिय रहता है।
- अर्थात् इस विधि में शिक्षक व विद्यार्थी दोनों सक्रिय रहता है।
- ③ यह विधि देखो, सुनो व समझो के सिद्धान्त पर आधारित है।
- ④ इस विधि में वैज्ञानिक नियमों, सिद्धान्तों व सूत्रों की सरलता से सीखा जा सकता है।

○ दोष / कमियां :-

- ① इस विधि में छात्रों को अप्रत्यक्ष अनुभव होते हैं।
- ② ज्यादा बड़े समूह में प्रदर्शन अधिक प्रभावशाली नहीं हो पाता है।
- ③ इस विधि में छात्रों में प्रयोगात्मक कुशलताओं का अपेक्षित विकास नहीं हो पाता है।

(3) व्याख्यान - प्रदर्शन विधि :-

यह व्याख्यान व प्रदर्शन विधि का मिला जुला रूप है जिसमें इनकी कमियों को दूर किया जाता है।

↳ इस विधि में विद्यार्थियों का एक ग्रुप या समूह बनाकर उनके सामने एक समस्या रखी जाती है तथा सभी सदस्यों का उस समस्या से संबंधित उनके मस्तिष्क में आने वाले विचारों को प्रकट करने की बिना किसी रोक-टोक व सही गलत के पूर्ण स्वतंत्रता दी जाती है एवं प्राप्त विचारों पर परिचर्चा उपरांत प्राप्त निष्कर्ष को समस्या के हल के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है।

① पद / सोपान (Step) → 1987 में विल्सन ने दिये।

- | | |
|--------------------------------|--|
| ① परिचय | ⑥ मस्तिष्क विप्लव |
| ② हिमयंजक | ⑦ प्रमुख सुझाव के चयन और उसके उपयोग के सुझाव |
| ③ विषय या समस्या का परिभाषीकरण | |
| ④ समस्या का संकेन्द्रण | ⑧ मूल्यांकन करना |
| ⑤ संकेन्द्रीय कथन का चयन | |

⑨ खेल विधि :- पर्यावरण विषय के शिक्षण में यह विधि उपयोगी है।

↳ खेल-खेल में जो बात विद्यार्थी सीख जाते हैं, वह कभी नहीं भूलते हैं इसलिए प्राथमिक व पूर्ण प्राथमिक कक्षाओं के लिए विधि एक मनोरंजन का कार्य भी करती है। और बच्चे उसमें रुचि लेने लगते हैं। धीरे-धीरे खेल के माध्यम से वह सीखने भी लगते हैं।

* इसके अंतर्गत निम्न विधियां शामिल हैं →

- | | |
|----------------------|--------------------|
| ① किन्डर गार्दन विधि | — फ्राबेल |
| ② मॉण्टेसरी विधि | — मारिया मॉण्टेसरी |
| ③ डॉल्हन विधि | — डॉल्हन |
| ④ खेल विधि | — कोल्डवेल कुक |

- ③ विद्यार्थी द्वारा परिचर्चा से पूर्ण की जाने वाली तैयारी
- ④ परिचर्चा का संचालन ।
- ⑤ परिचर्चा के बाद का कार्य
- ⑥ मूल्यांकन

(5) पर्यटन / शैक्षिक भ्रमण विधि :-

- अन्य नाम - पर्यटन विधि, क्षेत्र परिदृश्य विधि, सरस्वती यात्रा स्कूली जर्नी, एम्सकर्सन ।
- प्रतिपादक - अरस्तु, प्लेटो, पेस्टोलॉजी

↳ प्राथमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण के लिए शैक्षिक भ्रमण विधि उपयोगी है।

- ① उद्देश्य :-
- ① विषय के प्रति रुचि विकसित करना ।
 - ② वास्तविक प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना
 - ③ व्यवहारिक ज्ञान देना ।

① लाभ / विशेषता :-

- ① छात्र निरीक्षण द्वारा स्वयं सीखते हैं तथा अनौपचारिक शिक्षण प्रदान करना संभव हो पाता है।
- ② छात्रों की जिज्ञासा व शंकाओं का समाधान होता है।
- ③ छात्र-शिक्षक के निकट संपर्क से आत्मीयता बढ़ती है।

① कमी / सीमाएँ :-

- ① छात्र संख्या अत्यधिक होने से आयोजन में कठिनाई होती है।
- ② विद्यालय समय सारणी में इन कार्यक्रमों की व्यवस्था नहीं होती है एवं समयाभाव की समस्या बनी रहती है।

(7) समस्या समाधान विधि :-

इस विधि में विद्यार्थी के समझ कोई विशेष समस्या या कठिनाई या परिस्थिति रखी जाती है, जिसका विद्यार्थी मानसिक क्रियाओं द्वारा हल ढूँढने का प्रयास करता है।

○ पद/सोपान (Steps) →

- ① समस्या का चयन
- ② समस्या का प्रस्तुतीकरण
- ③ परिकल्पनाओं का निर्माण
- ④ आंकड़ों का विश्लेषण
- ⑤ आंकड़ों का संग्रह
- ⑥ आंकड़ों का विश्लेषण

○ लाभ :-

- ① इस विधि द्वारा छात्रों में विश्लेषण, संश्लेषण व समालोचनात्मक चिंतन का विकास होता है।
- ② इस विधि द्वारा निरीक्षण शक्ति, तर्क शक्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।

○ कमीयाँ/सीमाएँ :-

- ① यह विधि छोटी कक्षाओं के छात्रों के लिए अधिक उपयुक्त नहीं है।
- ② इसमें सीखने की गति धीमी होती है।
- ③ सही समस्या का चयन करना स्वयं एक समस्या है।

⑧ मष्तिष्क उद्देलन विधि :- ○ प्रतीपादक - रूलेम्स F. ऑसबोर्न

- अन्य नाम → ① मष्तिष्क विप्लव ② मानस उद्देलन
③ मष्तिष्क आवेशक ④ मष्तिष्क झंझावात

⑥ अभिक्रमित अनुदेशन :- इस विधि में सीखने योग्य सामग्री या विषय वस्तु को छोटे-छोटे पदों या खण्डों में क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है

↳ इसमें विद्यार्थी अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार स्वयं प्रयत्न करके अपनी गति से सीखता है।

⑦ इस विधि में प्रयुक्त शिक्षण सूत्र :-

- ① सरल से कठिन की ओर।
- ② ज्ञात से अज्ञात की ओर।
- ③ मूर्त से अमूर्त की ओर।
- ④ स्थूल से सूक्ष्म की ओर।

↳ अभिक्रमित अनुदेशन या अभिक्रम या उदगम अधिगम के मनोविज्ञान से हुआ है (थॉर्नडाइक के प्रभाव के नियम पर आधारित है)

⑧ प्रतिपादक - B.F स्किनर

⑨ B.F स्किनर के अनुसार →

"अभिक्रमित अनुदेशन शिक्षण की कला तथा सीखने का विज्ञान है।"

⑩ प्रकार →

- ① रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन - B.F स्किनर
- ② शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन - नार्मन A. काउडर
- ③ मैथेडिम्स / अवरोह अभिक्रमित अनुदेशन ↓

= T.F गिलबर्ट

④ कम्प्यूटर सह अनुदेशन - लॉरेन्स स्तोल्बोरो